The Research Dialogue
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-2, Issue-3, October-2023
www.theresearchdialogue.com

भारतीय समाज और शिक्षा

प्रा.प्रिया माणिकराव नेहर

पी.आर.पाटील शिक्षण महाविदयालय तळेगाव शा.प.

ता.आष्टी,जि.वर्धा,महाराष्ट् राज्य

संक्षेप–

किसी भी व्यक्ती,समाज या देश का विकास किस तरह से हुआ है या हो रहा है यह सब उस देश तथा समाज तथा व्यक्ती के सामाजिक संबंध,मूल्य और शिक्षा पर निर्भर होता है। प्रस्तुत संशोधन पत्र मे समाज, समाज का अर्थ, समाज कि विशेषताए समाज की अवधारणाए भारतीय समाज का परम्परागत स्वरुप तथा आधुनिक स्वरुप उनकी विशेषताए इन सभी मुद्दो का विस्तृत अध्ययन किया गया है। शिक्षा का समाज क्या महत्व है, शिक्षा से व्यक्ती समाज तथा देश विकसित होने मे सहायता करता है यह स्पष्ट किया गया है। समाज और शिक्षा का आपस मे सम्बन्ध और उसका परिणाम यह सब इस संशोधन पत्र मे अध्ययन किया गया है।

विद्यालय यह समाज कि छोटी प्रतिकृती है। समाज मे एक अच्छा नागरिक,मूल्य का सही तरीके से निर्वाहन तथा देश की आर्थिक,सामाजिक,नैतिक,राजकिय एवंम सांस्कृतिक विकास मे शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है। व्यक्ति विकास यह शिक्षा तथा समाज दोनो का मुख्य उद्देश है। शिक्षा की परिभाषाए,उद्देश,प्रकृति विश्लेषणात्मकम अर्थ स्पष्ट किया गया है। इससे शिक्षा का महत्व कितन पडा है और समाज विकसित करने मे वह कैसे अपनी भूमिका निभाता है यह प्रस्तुत संशोधन पत्र मे स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

संकेत शब्द– *1.समाज, 2.विशेषताएँ, 3अवधारणाएँ, 4स्वरुप, 5शिक्षा, 6प्रकृति*

समाज का अर्थ एवं परिभाषा

समाज का शिक्षा से घनिष्ठ संम्बन्ध है। यही कारण है कि समाज अपनी नागरिकों कि शिक्षा के लिए अच्छी से अच्छी व्यवस्था करता है। जिससे शिक्षीत होणे पर वे सुयोग्य सच्चरित्र तथा कर्मठ नागरिको के रूप मे समाज की आवश्यक्ताओ ,आकांक्षाओ तथा आदर्शो के अनुसार शिक्षा का मुख्य आधार है ध्यान देंणे की बात है कि भारतीय समाज विभिन्न समूहो जातियो तथा वर्गो का पुंज है। उक्त सभी समूहो ने भारतीय बालको को किसी न किसी प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने मे सहयोग प्रदान किया है। (1)

उपरोक्त संशोधन पत्र में भारतीय समाज तथा शिक्षा के उपर नये आयाम और उसकी आवश्यक्तावो पर ज्यादा विचार विमर्श किया गया है।

भारतीय शिक्षा का सामाजिक आधार समझनेके लिए इन सबी समुहोका अध्ययन करना परम आवश्यक है। मोटे तौर पर भारतीय समाज के दो पहलू है। पहला उसका परंपरागत Traditional स्वरूप तथा दुसरा इसका आधूनिक(Modern) (2)

समाज का वास्तविक आधार सामाजिक संबंध है। वास्तव मे यह कहना ही सर्वाधिक उपयुक्त है कि समाज

1.उदयीमान भारतीय समाज मे शिक्षक अत्री विनोद कुमार, सुमित एन्टरप्राइजेज, नईदिल्ली,पृ.क.241

2.उदयीमान भारतीय समाज मे शिक्षक,अत्री विनोद कुमार,सुमित एन्टरप्राइजेज,नई दिल्ली,पृ.क.241

रितीयो और कार्यप्रणालीयो, प्रभूत्व और पारंपारिक साहायता विविध समुहो और श्रेणीयो मानव व्यवहार के नियंत्रणो और स्वातंत्रताओ की व्यवस्था है पर यह ग्यात है कि सामाजिक व्यवस्था काई स्थिर या अचल व्यवस्था नही है वरन गतिशिल है। अंतः एक समय मे भिन्न भिन्न सामाजिक व्यवस्था मे रितीयो, कार्यप्रणालीयो, प्रभूत्व और पारंपारिक साहायता समूहो और श्रेणीयो तथा मानव व्यवहार के नियंत्रणो और सहायतो का स्वरूप निरन्तर बदलता रहता है। (3.प्रस्तुत संशोधन पत्रमे समाज की विशेषताऐ, समाजकी अवधरणा, आधूनिक समाज की विशेषताऐ, उदयीमान भारतीय समाज की शैक्षणिक आवश्यकताऐ स्पष्ट करणे का प्रयास किया गया है।

शिक्षा यह मानव के लिए अत्यंत आवश्यक है। जो कि कुटुंब, समाज, विदयालयो और अलग अलग माध्यमसे मिलता है।

शिक्षा से हमारे व्यवहार मे परिवर्तन होता है क्योंकी यह अनुभवो की रचना एवं पूर्रचना कि प्रक्रिंया है। अनूभवो के परिणाम स्वरूप व्यवहार परिवर्तन होता है। शिक्षासे व्यक्ति की कुशलतामे वृध्दि होती है। कुशलता–वृध्दिसे समाजभी अप्रत्यक्ष लाभांन्वित होता है। व्यवहार परिवर्तन से सामाजिक कुशलता ही नही अपितु सामाजिक नैतिक्ता का भी विकास होता है। शिक्षा प्रक्रिया को विदयालया अवस्था विशेष तक ही सिमीत नही किया जा सकता क्योंकि विदयालय के बाहर भी तथा छात्रावस्था के बाहर भी व्यवहार परिवर्तन ही प्रक्रिया स्वानुभाव और अन्योकि साहायता से चलती रहती है। (4) प्रस्तुत शोध पत्र मे शिक्षा का उददेश, शिक्षा कि सही धारणा शिक्षा और समाज का संबंध इन बाबीपर अध्ययन किया गया है।

साधारण बोलचाल मे 'समाज' शब्द नित्यही प्रयोग होता है, लेकिन इनका समाजशास्त्रीय अर्थ नही समझते। समाजशास्त्रीय दृष्टिसे समाज सामाजिक संबंधो का जाल या ताणा बाना है। सामाजिक संबंधोकी अमूर्त

व्यवस्था है। यह वह व्यवस्था है कि जिसमे संघटित और विघटित सभी प्रकारके सामाजिक संबंध संम्मिलीत हैं।

मैकाइवर तथा पेज के अनुसार '' समाजकार्य प्रणाली और चलनोकी अधिकार सत्ता और पारंपारिक सहायता कि, अनेक समुह और श्रेणीयोंकि तथा मानव व्यवहार की नियंत्रण अथवा स्वतंत्रतावोकि एक व्यवस्था है। इस निरंतर परिवर्तनशिल और जटिल व्यवस्थाको हम समाज कहते है। यह सामाजिक संबंधोका एक ताणा बाणा है और यह सदा बदलता रहता है। (5.)

साधारण बोलचाल मे 'समाज' शब्द नित्यही प्रयोग होता है, लेकिन इनका समाजशास्त्रीय अर्थ नही समझते। समाजशास्त्रीय दृष्टिसे समाज सामाजिक संबंधो का जाल या ताणा बाना है। सामाजिक संबंधोकी अमूर्त व्यवस्था है। यह वह व्यवस्था है कि जिसमे संघटित और विघटित सभी प्रकारके सामाजिक संबंध संम्मिलीत हैं

गिडिंग्स ने लिखा है कि ''समाज यह एक संघ है, एक संघटन है, औपचारिक संबंधोका योग है जिसमे सहयोग व्यक्ति परस्पर संबंध हैं।'' समाज की इस परिभाषामे समाज के संघटन पक्षपर बल दिया गया है। यह बताया गया है कि समाज बिखरे हूऐ व्यक्तियोका संग्रह मात्र नही होता। समाज के सदस्य एकदुसरेसे संबंध होते है। परिवार, जाती, वर्ग अथवा संस्थावोके आधार पर उनमे कुछ आपसी औपचारिक संबंध पाये जाते है। (6)

3.समाजशास्त्र एवं भारतीय समाज मे शिक्षा, सिंह अमरिन्द्र कुमार, श्री कविता प्रकाशन, इंडिया, पृ.क्रं.175

4. समाजशास्त्र एवं भारतीय समाज मे शिक्षा,अमरेंद्रकुमार,श्री कविता प्रकाशन, इंडिया, पृ.क्रं.1

5.समाजशास्त्र एवं भारतीय समाज मे शिक्षा,अमरेंद्रकुमार,श्री कविता प्रकाशन, इंडिया, पृ.क्रं.174

6 समाजशास्त्र एवं भारतीय समाज मे शिक्षा,अमरेंद्रकुमार,श्री कविता प्रकाशन, इंडिया, पृ.क्रं.175)

सामाजिक प्रक्रिया से तात्पर्य यह है कि, व्यक्ति किसप्रकार अपने समाज कि संस्कृतीको ग्रहण करता हैं। अतः सामाजिक प्रक्रियामे सामाजिककरण का महत्तवपूर्ण स्थान है क्योंकि इसके व्दारा व्यक्ती अपने समाज और संस्कृती के अनुसार जिवन व्यतित करणा सिखता है।

समाज एक जिवीत प्राणीकी भांती है। इसमे निरंतर विकास होता रहता है। फलतः समाज परिवर्तनशिल माना जाता है। जाहातक सामाजिक परिवर्तन स्वरूप का संबंध है इसकी और समाजशास्त्रीयोंने पर्याप्त ज्ञान दिया है। जहा तक समाजशास्त्रीयो का संबंध है उनमे से कोन्त, मार्क्स और स्पेंसर सामाजिक परिवर्तन के स्वरूप पर पर्याप्त प्रकाश डाला। कोन्त मे सामाजिक परिवर्तनमे विकास कि प्रक्रिया पाई। दुसरे शब्दोमें कोन्त का यह विचार था कि प्रत्येक समाज समय के साथ विकास करता है और यही विकास परिवर्तन के रूप मे स्विकार कीया जाता है। लेकिन कोन्त के ईस विचार का समर्थन तत्कालीन समाजशास्त्रियोने नही किया। दुर्खीम ने यह विचार व्यक्त किया कि, विभिन्न देशामे पाया जानेवाला समाज विकास कि विभीन्न परिस्थितीयोमे है। दुसरे शब्दोमे एकही कालमे विकास कि दृष्टि से सभी प्रकार के समाज पाये जा सकते है। उदाहरण के लिए काई समाज औदयोगिक तथा आर्थिक दृष्टिसे पिछडा हो सकता है तथा कोई अत्यंत प्रगतिशील। अतः यह मानना है कि समय के साथ समाजोका विकास होता है, तर्कसंगत नही मालूम पडता दुर्खीमने

विभिन्न समाजोकि आर्थिक प्रगतीके आधार पर सामाजिक विकास कि एक ऐसी कल्पना कि जो व्यापाक रूप से स्विकृत हुई। लेकीन सामाजिक परीवर्तन के संबंधमे मार्क्स का जो दृष्टिकोन है वह कुछ वर्गो मे अत्यांधिक स्विकार किया गया। मार्क्स ने इतिहास के आधार पर यह सिध्द करने का प्रयास किया कि किस प्रकार पुंजीवादने समाज के विकास को अववृध्द कियां। (7)

समाज कि विशेषताएः–8

1.समाज मे समानता और भिन्नता दोनो सन्निही है–समाज मे समानता और भिन्नतस दोनो का अस्तित्व है।बाहय रुप मे दोनो का अस्तित्व है। बाहय रुप मे दोनो का परस्पर विरोधी लगती है,लेकिन अरल्तीिक रुप ो दोनो एक दूसरे के पूरक है।

2.समाज अमूर्त है–सामाजिक सम्बन्धो के जाल का नाम ही समाज है। अतःसमाज कोई प्रत्यक्ष स्तूल वस्तू नही है। सम्बन्धो का हम अनुभव कर सकते है,उन्हे देख नही सकते।

3–समाज जागरुकता पर आधारित है–जागरुकता की उपस्थिती समाज का आवश्यक तत्व है,क्यो कि इसके अभाव मे सामाजिक सम्बन्धो का निर्माण नही हो सकता। जागरुकता का अर्थ 'किसी स्थिती के प्रति मानसिक चेतना निम्न कोटि के प्राणियो मे सामाजिक जागरुकता का या तो अभाव होता है।

समाज की अवधारणा :– (9)

1– प्रभूत्व या अधिकार सत्ता –

प्रभूत्व अथवा अधिकार सत्तासे एक ऐसे संबंका बोध होता है जिससे समाज के कुछ व्यक्तियोके संबंध अधिकार के होते है और कुछ व्यक्तियो के संबंध अनुसरण करणे वालो या अधीनता मानने वालो के।

———

7 शिक्षा का समाजशास्त्र, तिवारी शारदा, अर्जून पब्लिशिंग हाउस,नईदिल्ली पृ.कं.209)

8..समाजशास्त्र एवं भारतीय समाज मे शिक्षा,सिंह अमरिंन्द्र कुमार,श्री कविता प्रकाशन इण्डिया,पृ.क.175–176

2– विभाग और समूह –

इनसे मैकाइवर का अभिप्राय उुन सभी समुहो और संगठनोसे है जो परस्पर संबध रहकर समाज को व्यवस्थीत बनाते है। समाज एक विशाल व्यवस्था है जिसके निर्माण में अनेक समुहो और सामाजिक विभागोकी शक्तीनिहीत होती है। समान हितो अथवा समान उद्देशो वाले व्यक्ती मिलकर विभिन्नप्रकारके समुह बनाते है और पारस्पारिक सहयोग से अपनी उद्देशोको पुरा करते है।

3– कार्यप्रणालीयॉ–

मैंकाइवर ने कार्य प्रणालीयो शब्दका प्रयोग संस्थाओं के लिए किया है क्योकि संस्थाएँ सामुहिक कार्य करने की सर्वोच्च प्रणालीया होती है। प्रत्येक समाज के उद्देशोकी पुर्ती के लिए कुछ विशेष प्रणालीया अपनायी जाती है। और समाज के सदस्यो से आशा कि जीती है की वे इन्हके व्दारा अपने कार्य को पुरा करेंगें।

4– परस्पर सहयोग –

सामाजिक संबधकों स्थापित करने मे यह समाज का अधिक महत्वपुर्ण तत्व है। पारस्पारीक सहयोग के अभाव से किसी प्रकार भी समाज के संघटन कल्पना नही की जा सकती। इसके बढणे से समाज का विकास होता है और घटने से समाज छिन्न–भीन्न होने लगता है।

5– स्वतंत्रता–

नियंत्रणको के साथ–साथ स्वतंत्रता भी आवश्यक है, अन्यथा समाज की उन्नती नही हो सकती, मनुष्य का समुचीत विकास नही हो सकता। स्वतंत्रता का अनुभव करने पर ही व्यक्ती सामाजिक सम्बधोंका विकास परिस्थितीयों के अनुसार स्वयंम कर सकते है।

6– चलन अथवा रितियॉ–

ये समाज की वे स्विकृत पध्दतिया है जिन्हे व्दारा व्यवहार के क्षेत्र मे उचित समझा जाता है। प्रत्येक समाजमे कार्य करणे के लिए अपनी कुछ पृथक रितीया होती है। जैसे भोजन करने की रिती, शिक्षा प्राप्ती की रिती , संस्कारोंको पुरा करने की रिती आदी। समाज के सदस्योंको का दैनिक जिवन इन्ही रितीयो अथवा चलनो से चलता है।

7–मानवव्यवहार के नियंत्रण–

समाज में मनुष्योको अपना मनचाहा व्यवहार करने के लिए स्वतंत्रत नही छोडा जा सकता। व्यवस्था बनाएये रखने के लिए व्यक्तीयो तथा समुहो के व्यवहारो पर नियंत्रण रखना नितान्त आवश्यक है। (8,9)

9.समाजशास्त्र एवं भारतीय समाज मे शिक्षा,सिंह अमरिंन्द्र कुमार,श्री कविता प्रकाशन इण्डिया,पृ.क्र.175–176

भारतीय समाज का परम्परागत स्वरूप(10)

भारतीय समाज के परम्परागत स्वरूप के अतर्गत विभिन्न समुह आते है। जो प्राचीन काल में तो उपयोगी सिध्द हुऐ, परंन्तु वर्तमान युग में अपनी अपनी सकीर्णता के कारण वे सब के सब समाज की प्रगती मे बाधा डाल रहे है।

निम्नलिखित दिऐ गये प्रमुख समुह वर्गो तथा संघटनो पर भारतीय समाज का परपरागत स्वरूप आधारित है।

1 सामाजिक समुह (Social Group)

2 जाति(Caste)

3 व्यवसायिक समुह(Occupational Group)

4 धार्मिक समुह(Rellgious Group)

5 अन्य सामाजिक वर्ग(Other Social Classes)

1सामाजिक समूह

मानव समाज का आधार सामाजिक समुह है। यही सामाजिक समुह व्यक्ती, बालके शिक्षा का मुख्य आधार है। सामाजिक समुह का निर्माण दो या दो से अधिक व्यक्तीयो व्दारा होता है। समुह के दो प्रकार होते है।

1– स्थायी समुह, 2– अस्थायी समुह। परिवार, स्कुल, क्लब, व्यायामशाला, खेल कुद के समुह तथा विभिन्न व्यावयिक संगठन स्थायी समुह कहलाते है। ऐसे ही सह संगती, के समुह तथा भाषण सुनने वालो के समुह आदि अस्थायी समुह के उदाहरण है।

2– जाती– जाती उस वर्ग अथवा झुंड को कहते है जिसमे सदस्योंकी सदस्यता तथा उनके कर्तव्य एवं अधिकार जन्म से ही निश्चित हो जाते है। ज्ञान देने की बात है की जाती एक बन्द वर्ग(ब्सवेमक ब्सें) है। इसका कारण यह है की किसी जाती का कोई सदस्य अपनी जाती के अतिरिक्त दुसरी जाती में स्थान प्राप्त नहीं कर सकता। प्रत्येक जाती के लागो का भोजन, विवाह, आजिवीका, परपंराओं की एकरूपता तथा आचार विचार इसके सदस्योंकी एकता का आधार है।

3–व्यावसायिक समुह– जी.एस.घुरे ;के अनुसार प्रत्येक जाती का अलग अलग व्यवसाय होता है तथा उसका प्रत्येक सदस्य उसी व्यवसाय को अपनाता है। अतः व्यावसायिक उस समुह को कहते है जिसका प्रत्येक प्रत्येक सदस्य किसी अमुक व्यवसाय मे लगा रहता हो। इस दृष्टी से नेसफिल्ड तथा डालमैंन का मत है। की जाती प्रथा की उत्पती व्यवसाय से हुई हैं। उक्त दोनो विदवानों के मत को ठिक नही कला जा सकता इसका कारण यह है की एकही जाती के व्यक्ती विभिन्न व्यवसाय को करते है तथा एकही व्यवसाय उदहारण के लिए खेती को विभिन्न जातियोंने अपना रखा है। पर हमे इस सबसे उपर उठना है। लागो को तरह तरह का व्यवसायिक प्रशिक्षण देकर उन्हे व्यवसायिक कुशल बनाना यही समाज का श्रेष्ठ कारण है। 10.

4– धार्मिक समुह– भारत में अनेक भाषाओ तथा धर्मोके लोग निवास करते है। यहा पर लगभग 380 भाषा बोली जाती है जिनमेंसे भारतिय सविधान में 14 भाषाओं मुख्य स्थान दिया है।

1.आसामी, 2.बंगाली, 3.गुजराती 4.हिन्दी , 5.कन्नड 6. कश्मीरी 7. मलायलम 8. मराठी 9. उडीया 10. पंजाबी 11.संस्कृत 12.तमील 13 तेलगु 14. उर्दु।

भाषाओं के अतिरिक्त यहा हिन्दु मुसलमान, सिख, इसाई, पारशी, तथा जैन एवं बौध्द आदि अनेक धार्मिक समुह पाए जाते है। उपरयुक्त सभी धार्मिक समुहोका भारत के सामाजिक जिवन मे विशेष महत्व है। धार्मिक समुह लोगो में प्रेम, श्रध्दा, तथा आनंद आदि संवेगो को उत्पन्न करता है। धार्मिक समुह मे सदस्यो को नैतिक विकास भी होता है। घनिष्टता बढती है , तथा सामाजिक ऐकता स्थापित होती है।

5– अन्य सामाजिक वर्ग– भारतिय समाज में जहॉ एक और धार्मिक तथा व्यावसायिक समुह पाए जाते है, वहा दुसरी और विभिन्न आयु, योनि, जाति, धर्म तथा उद्योगोके आधार पर भी अनेक प्रकार की सामाजिक वर्ग दिखाई पडते है। ऑगबर्न तथा निमकॉक के शब्दोमे कह सकते है श्एक सामाजिक वर्ग उन व्यक्तीओका योग हे, जिनकी एक विषेश समाजमे आवश्यक रूपसे समान सामाजिक स्थिस्ती है।श

सामाजिक वर्ग का तात्पर्य समाज के उस भाग से है जिसके सदस्योकी एक निश्चीत सामाजिक परिस्थीती होती है। कुछ सामाजिक वर्गोका निर्माण उच्च, मध्यम तथा निम्न तीन श्रेणियो के आधार पर भी होता है।

1. भारतीय समाज का आधुनिक स्वरूप (11)

(Modern Nature of Indian Society)

भारतीय समाज के आधुनिक स्वरूप को पूर्ण रूप से समझने के लिए हमे इसके अतित का अध्ययन करना होगा.

अ. प्राचिन काल मे भारतीय समाज (Indian Society पद Ancient India)

वैदिक काल मे भारतीय समाज की प्रकृती अत्यंत सरल थी। समस्त समजा चार वर्ग मे विभाजीत था। ये वर्ण थे 1. ब्राम्हण 2. क्षत्रीय 3. वैश्य तथा 4. शुद्र। लोगोका धर्मभी सरल ही था। समाज मे स्त्रियोको तथा पुरूषोके अपने अपने विकास के लिये समान अवसर उपलब्ध थे। कृषी उस युगका मुख्य व्यवसाय था। तथा पशुओको संपत्ती समझा जाता था।

ब. मुस्लीम काल मे भारतीय समाज (Indian Society पद Muslim Period)

मुस्तीम शासक विलाशितापूर्ण जिवन व्यथीत करते थे । इससे समाज मे शराब पिना तथा जुआ खेलना आरंभ हो गया। हिंदुओ और मुसलमानोके आपसी संबंध भी अच्छे न थे. मुस्लीम कालीन भारतीय समाजमे बाल विवाह, सती की प्रथा, विधवा प्रथा, बहु विवाह आदी अनेक कुरीतियो का जन्म हो गया हिंदु लोक भक्तीकी और बढने लगे। मुगल शासक भी विलासीत, पुर्ण शासनमे विश्वास करते थे। परंतु उन्होने निर्माण कला तथा साहित्य को प्रोत्साहीत किया एंव हिंदुओको भी शासन मे उच्च पद प्रदान किये । मुगल शासनमे हिंदुओकी दशा मे बहुत कुछ सुधार हुआ जिनके परिनाम स्वरूप अकबर, जहांगीर तथा शाहजांह के युग मे हिंद और मुसलमान प्रत्येक त्योहार को मिलजुलकर बडी धुमधामसे मनाते थे।

क. ब्रिटिश शासन काल में भारतीय समाज (Indian Society पद British Rule)

अंग्रजो के साथ पाश्चात्य संस्कृति भी भारत मे आई जिसने भारतीय सामाजिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया। राजा राममोहन राय ने भारतीय समाज के उत्थान के लिए जातीप्रथा, मुर्तिप्रथा का खंडन किया आर्यसमाज तथा रामकृष्ण मिशन ने जनता मे राष्ट्रीय भावनाओ को विकसीत किया।

10.उदयीमान भारतीय समाज मे शिक्षक,अत्री विनोद कुमार,सुमित एन्टरप्राइजेज,पृ.क्र.242

इधर भारतीय दर्शनिको, समाजसुधारको तथा शिक्षा शास्त्रियों ने भी केवल वैदीक कालीन भारतीय संस्कृतीका राग न अलापते हुए भारतीय जनता को सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, तथा सांस्कृतिक दृष्टी से विकसीत करने का अथक प्रयास किया। इसी तरह अनेको व्यक्ति, समाजसुधारकोने भारत में बदलाव लाया। पंडीत ईश्वरचंद विद्यासागर, महात्मा गांधी, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जैस से कुशल समाजसुधारकोने यह बदलाव लाये।

प्रसिध्द इतिहासकार जदुनाथ सरकारके शब्दोमे हम यह देखने मे असफल नही हो सकते की इनके ब्रिटिश शासन काल व्दारा हमारे समाज मे अनेक क्रांतिकारी परिवर्तन हुए है। अंग्रेजी शासन काल में भारतीय समाज के अंदर निम्नलिखीत परिवर्तन लाभप्रद सिध्द हुऐ है।

1. धर्म अथवा जाति के भेदभावो से उपर उठकर सबको समानता।
2. मजदुरो तथा किसानो का दासता की स्थिीती के उपर उठाकर पुर्ण नागरिकता की स्थिती तक पोहचना।
3. विस्तृत एव प्रभावशाली मध्यवर्ग का विकास।
4. पूँजीपति वर्ग का उत्थान
5. हिन सामाजिक स्थिती से स्त्रियोको का सुधार
6. जातिप्रथा का विघटन
7. प्रान्तीयता, भाषा संम्बन्धी तथा धार्मिक मतभेदो का शनैः –हास.

भारतीय समाज का आधुनिक स्वरूपः–

ब्रिटिश शासन कालमे कई क्रांतिकारी बदलाव हुऐ थे। किंतु अग्रेजी शासन सिर्फ अपना हुतु पुरा कर रहे थे जैसे की 1.ब्रिटिश काल मे जनता की निर्धनता ने विकराल रूप धारण कर रखा था।

2. राष्ट्रका आर्थिक दृष्टी से शोषण हो रहा था।
3. देश की उत्पादन क्षमता घटती जहा रही थी।
4. शासन मे उच्चपद केवल अंग्रेजोको ही मिलते थे।
5. शिक्षा का विकास संतोष जनक नही हो रहा था आदि।

1. निर्धनताः– भारतीय समाज मे अभितक चारो और निर्धनता फैली हूई है।
2. धर्म मे विश्वास की कमी :– भारत धर्मप्रधान देश रहा है परंतू अब लोगो का धर्म तथा प्राचिन आदर्शो एवं परंपरावो के प्रति अंधविश्वास समाप्त होता जा रहा है।
3. बेरोजगारी :– हमारे समाज मे बेरोजगारी की समस्या बहूत बढ गई है। इसके लिए अनैतिक कार्य करते हूऐ भी नही डरते।
4. विघटनकारी प्रवृत्तीयो को प्रोत्साहन :– हमारे देश मे जनसंख्या के अनुपात मे खादय सामुग्री एव अन्य वस्तूवो का उत्पादन नही हो रहा है। इससे कभी कभी तो लोगो को जीवन रक्षा के पदार्थ भी नही मिल पाते है। उक्त वस्तूवो के अभाव मे नाना प्रकारकी विघटनकारी प्रवृत्तीयो को प्रोत्साहन मिल रहा है।
5. उच्च पदो के लिए दौडः– वर्तमान युग दौड का युग है। अंततः भारतीय समाज मे उच्च पद एवं सम्मान प्राप्त करने कि दौड लगी हूई है।

6. उच्च आकांक्षाएँः– आधूनिक युग मे प्रत्येक व्यक्ति की इच्छाऐ एवं आकाक्षाएँ दिन प्रतिदिन बढती चली जा रही है।

7. बाल विवाह तथा दहेज कि प्रथाः– शारदा ऍक्ट के अनुसार बालविवाह को गैर कानूनी घोषित कर दिया गया है। परंतू भारतीय समाज मे बालविवाह, अनमेल विवाह तथा दहेज की प्रथा अभी प्रचलित है।

8. संयुक्त परीवार का विघटनः– भारत में अब संयुक्त परिवार प्रणाली का अंत होता जा रहा है।

9. निम्नजिवन स्थरः– भारतीय समाज की सबसे छोटी ईकाई गाव है। और गाव में रहने वालो को जिवन स्थर अभि भी वैसा ही है जैसा पहले था।

आधुनिक समाज की विशेताएँः– (11)

1.लोकतांत्रिक समाज व्यवस्था– देश की स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय समाज लोकतांत्रिक समाज व्यवस्था पर आधारित होने की दिशा में उन्मुख है। सभी आधुनिक समाजो में यह व्यवस्था है।

2. व्यक्तीयों की समानताः– जाती, धर्म, वंश, लिंग, क्षेत्र आधिपर आधारित भेदभाव को मिटाकर व्यक्तीयों की समानता यह आधुनिक समाज की व्यवस्था है।

3.व्यक्तिस्वातंत्रः– व्यक्ती के विकास हेतु व्यक्ती स्वातंत्र आधुनिक मुल्य माना जाता है।

4. समाजवादी समाज व्यवस्थाः– भारतीय सविधान में समाजवादी समाज व्यवस्था को भी आधुनिक समाज की विशेषतः के रूप में एक आदर्श माना गया है। धनी व निर्धन का भेदभाव मिटाकर सर्वोदयी समाज की स्थापना ही आधुनिक समाज की एक विशेषता है।

5. सामाजिक न्यायः– आधुनिक समाज में पिछडे एवं दलित वर्गको अन्य वर्गो के समकक्ष लाने हेतु सामाजिक न्याय की दृष्टी से ध्यान में रखा जाता है।

6. धर्मनिरपेक्षः– आधुनिक समाज में किसी भी धर्म विशेष पर आग्रह नही होता। अपीतू धार्मिक सहिष्णुता व धर्मनिरपेक्षता की निती अपनाई जाती है।

शिक्षा का अर्थ एवं उद्देश

शिक्षा एवं मानव जिवन का मुल आधार है। बिना शिक्षित व्यक्ती स्वयंम का, समुह–समाज का अपीतू राष्ट्र का विकास नही कर सकता।

शिक्षा शब्द की उत्पती लॅटिन भाषा की दो शब्द Educatum और Educare से हुई है ऐसा माना जाता है। Educatum इसका अर्थ है Act of teaching or Training" और Educare, इसका अर्थ है To educate, To bring up, To raise" और इस प्रकार अंग्रेजी शब्द Education का शाब्दीक अर्थ है, प्रशिक्षण , संवर्धन एवं पथ प्रदर्शन करणेवाली प्रक्रिया । (12)

11..समाजशास्त्र एवं भारतीय समाज मे शिक्षा,सिंह अमरिंन्द्र कुमार,श्री कविता प्रकाशन इण्डिया,पृ.क्र.178

12, शिक्षा दर्शन, सिंह शाम, ओमेगा पब्लीकेशन पृ. क्र.01

शिक्षा कि परिभाषाएँ

1. शिक्षा– व्यक्ती की उस पुर्णता का विकास है, जिसपर वह पहूच सकता हैं। –कॉण्ट 13

2. शिक्षा से मेरा अभिप्राय उस प्रक्रिया से है जो बालक एवं मनुष्य के शरिर मन एवं आत्मा के सर्वोत्कृष्ठ रूपोंको प्रस्तूत कर दिया है।महात्मा गांधी14

3. एक ही क्षण मे सुख तथा दुख का अनुभव करने की योंग्यता का नाम शिक्षा है। यह शिष्य के शरिर तथा आत्मा मे सारे सौदर्य तथा संम्पूर्णता को उसकी योग्यता के अनुसार विकसित करती है।प्लेटो 15

शिक्षा का मूल उददेश :–

शिक्षा यह मानव के लिए अति आवश्यक है। इससे न कि मनुष्य का स्वयं विकास तथा आदर्श मुल्यो, संस्कृती, निती, नये पुराणे विचारो का संवर्धन किया जाता है। शिक्षा से मनुष्य सुसंस्कृत बनता है, प्रगतशिल बनता है, देश के हित के लिए प्रतिबन्ध भी रहता है।

निचे दिये गए शिक्षा का मूल्य उददेश है।

1.व्यक्ति विकास :– शिक्षा से व्यक्ति को अच्छे बुरे की पहचान होती है। विचारो को सही दिशा मिलती है।

2. मूल्यसवर्धनः–

शिक्षा से व्यक्ती को मुल्य, संस्कार और अत्युच्च विकास की प्राप्ती यह एक दिशा देने वाली एक सिख मिल है। उससे एक अच्छा सुसंस्कृत नागरिक बनाने में शिक्षा मुल्यवान कार्य करता है।

3. **संस्कृती संवर्धन/बचावः–**

शिक्षा से पुराणे से लेकर नये तक संस्कृती का महत्व, उसकी गरीमा सिखाई जाती है। इससे व्यक्ती को संस्कृती का बचाव करना चाहिए यह समजता है।

4. **अर्थार्जन की पूर्तताः–**

शिक्षा से हर मनुष्य अपने जिने की उपजिवीका जिवीका कमाना यह कर सकता है। शिक्षा से मनुष्य को अर्थार्जन के योग्य बनाता है।

5. **समाज का विकासः–**

शिक्षा से मनुष्य का शारिरीक, मानसिक और भावनाओं का भी विकास होता है। और घरपरिवार ,मित्र, विद्यालय ,स्कुल से उनका सामाजिक विकास भी होता है। इसतरह समाज का विकास होता है।

6. **राष्ट्रविकासः–** शिक्षा यह एक ऐसा प्रबल साधन है जिससे व्यक्ती खुदका, घरपरिवार का, समाज का, तथा राष्ट्रविकास में भी योगदान देता है।

7.समायोजन–

मनुष्य को अलग अलग परिस्थिती मे कैसे निर्णय लेने चाहिए। कठिण परिस्थिती या क्षण मे कैसे डट के सामना करना चाहिए यह सिख शिक्षा से ही मिलती है।

13,14शिक्षादर्शन,सिंहश्याम,ओमेगा पब्लिकेशन ,6

15.समाजशास्त्र एवं भारतीय समाज मे शिक्षा,सिंह अमरिंन्द्र कुमार, श्री कविता प्रकाशन,6

8.अतःनिरीक्षण–

खुद के गुण अवगुणो को परखना,अपनी क्षमताओ को वृध्दिंगत करना, अपनी जो कमीया है,खामीया है वो दूर करना यह सब शिक्षा से होता है।

समाजशास्त्री शिक्षा विद्वान एमील डरखीू यह मानते है कि, शिक्षा का उद्देश मानव का समाजीकरण करना है। उनका मत है 'संम्पूर्ण शिक्षा एक सतत प्रयास है जिसके द्वारा बालक को देखना, अनुभव करना और व्यवहृत करना सिखाया जाता है जो वह स्वतः तात्कालिक ढंग से नही जान सकता।16

शिक्षा की प्रकृती 17

शिक्षा के प्रकृती के संबंध मे दार्शनिको, समाजशास्त्रियो, राजनितिशास्त्रीयो, अर्थशास्त्रियो,मनोवैज्ञानिको और वैज्ञानिको ने विचार किया है। उस पर आधारित शिक्षा की प्रकृती को निर्धारित किया जा सकता है।

1. शिक्षा एक प्रकार की सामाजिक प्रक्रिया है। जिसके तीन अंग होते है– 1. सिखाने वाला, सिखनेवाला विषय सामुग्री

2. व्यापक अर्थ में शिक्षा समाज में चलनेवाली एक निरंतर प्रक्रिया है। यह केवल विद्यालयोंमे नही चलती बलकी सामान्य जिवन में भी सिखने को मिलता है।

3. शिक्षा एक उद्देश पुर्ण प्रक्रिया है। जिसके उद्देश समाज व्दारा निश्चित होते है। और समाजही इसे विकासोन्मुख बनाता है तथा शिक्षा ही समाज को विकासोन्मुख बनाती है।

4. शिक्षा की विषय सामुग्री अतिव्यापक होती है। इसे किसी सिमा में बांधा नही जा सकता है, परंतु संकुचित अर्थ में इसकी विषय सामुग्री और पाठयचर्या सिमीत होती है। परंतु दोन्हो में ही व्यक्ती और समाज दोनो की विकास में सहायक होती है।

5. शिक्षा के स्वरूप का निर्धारण उस समाज के धर्म, दर्शन, उसकी सरचना, संस्कृती , शासनतन्त्र, अर्थतन्त्र, और वैज्ञानिक प्रगती आदि पर निर्भर कर्ता है।

शिक्षा का कार्य ऐसे मानवी को सृजन करना है जो एकीकृत होकर समाज का विकास करे।

शिक्षा का विश्लेषणात्मक अर्थः–18,

1.शिक्षा सामाजिक विकास की प्रक्रिया–

शिक्षा का अभिप्राय केवल व्यक्तिगत विकास नही है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणि है उसे समाज मे ही अपना जीवन व्यतीत करना पडता है। अतः शिक्षा द्वारा उसका सामाजिक विकास किया जाता अति आवश्यक है।

2.शिक्षा एक सतत प्रक्रिया है –

वास्तव मे यह गतिशिज प्रक्रिया है,जो सदैव आगे की ओर बढती रहती है और इस प्रकार मनुष्यो को जीवन मे प्रगति करने के लिए तैयार करती है।

16शिक्षा की रुपरेखा,डॉ बैस एच.एस. आशिष पब्लिशिंग हाउस, पंजाबी बाग,नई दिल्ली 110026,पृ.क्र.19

17 शिक्षा के दर्शनिक एवं सामाजशास्त्रीय आधारगत परिपेक्ष्य,मदान,पूनम,अग्रवाल पब्लिकेशन पृ.क्रं.10–11

18, शिक्षा दर्शन, सिंह श्याम,ओमेगा पब्लिकेशन,पृ.क्र.4–5

3.शिक्षा व्यक्ती की जन्मजात शक्तियो का विकास करती हैः–

शिक्षाका मूल अर्थ यह है कि बालक की जन्मजात शक्तियो का सर्वांगिण विकास करके उसके जीवन को सफल बनाए। शिक्षा के इस पहलू पर बल देते हुए एडिसन ने लिखा हैः'शिक्षा वह प्रक्रिया है,जिसके द्वारा मनुष्य मे निहित उन शक्तियो और गुणो का दिग्दर्शन होता है, जिनका ऐसा होना शिक्षा के बिना असम्भव है।

4.शिक्षा केवल विद्यालय मे दिए जाने वाले ज्ञान तक सिमीत नही हैः–

शिक्षा का अर्थ इतना संकुचित नही है,जितना कि लोग समझते है। शिक्षा विद्यालय तक ही सिमीत नही रहती है। इसके विपरीत शिक्षा का कार्यक्रम जन्म से मृत्यु तक चलता रहता है। अनुभव से सिखना यह भी शिक्षा ही है जो निरंतर चलती रहती है।

5.शिक्षा एक द्विध्रुवीय प्रक्रिया है–

प्रसिध्द शिक्षा शास्त्री जॉन ॲडमने शिक्षा को द्विध्रुवीय प्रक्रिया माना है। इसमे शिक्षक एवं छात्र दोनो ही सक्रिय होते है।

6.शिक्षा एक त्रिध्रुवीय प्रक्रिया है–

रायबर्न ने शिक्षा की एक त्रिध्रुवीय प्रक्रिया माना है। उनके अनूसार इसमे विद्यार्थी,शिक्षक एवं पाठ्यक्रम तीन पक्ष होते है। शिक्षा मे इसके साथ साथ अन्य घटक भी महत्वपूर्ण होते है। जैसे शैक्षिक लक्ष्य, परिस्थितीयॉ,तकनिक, मूल्यांकन।

सारांशः–

उपरोक्त संशोधन पत्र दिये गये विचारो से भारतीय समाज और शिक्षा पर नई विचारधारा

1.शिक्षा और समाज यह बहुआयामी है। जिसमे दोनो भी एकमेकसे घनिष्ठ अंतर्निहीत संबंधित है।

2.समाज मे मनुष्य खुद को सुरक्षित महसूस करता है। तथा शिक्षा मनुष्य को सुरक्षा के नये नये आयाम कैसे विकसित करे यह सिखाता है।

3.समाज मे व्यक्ति का आर्थिक विकास,सामाजिक विकास तथा राष्ट् का विकास निहीत है। शिक्षा से हमे अर्थार्जन के विविध क्षेत्र खुलें होते है।

4.समाज और शिक्षा से दोनो मे ही मूल्य संवर्धन एक ही उद्देश है।

5.व्यक्ति का सर्वांगिण विकास करने मे शिक्षा का बहोत बडा योगदान होता है। तथा सिखाये गये मूल्यो को समाज मे जीवन व्यथित करते समय अपनाया जाता है।

6.संस्कृतिसंवर्धन, सुजान नागरिक, परंपराओ का मान्यता का विकास यह समाज का अविभाज्य ऐसा भाग है।

7.सामाजीकरण करने मे शिक्षा का योगदान सबसे बडा है।

8.सामाजिक विचारो को बदलना,नये विचारो को समाज मे ढालना यह शिक्षा से ही हो सकता है।

भारतीय समाज और शिक्षा का विकास

1.समाज के मूल्य का संवर्धन–शिक्षा और समाज का एक ही उद्देश है उच्चतम मूल्यो का संवर्धन किया जाना। उसे और बढाने के लिए विद्यालयो मे समाज मे अलग अलग तरह से कार्यक्रम लिए जाने चाहिए।

2.उच्चतम व्यक्ति का निर्माण – किसी भी देश या समाज मे उच्च विचारधारा,उच्च नेतृत्व और समायोजित व्यक्ति का निर्माण यही उद्देश होता है। स्कूलो मे अलग अलग कार्यो मे सहभाग लेके, ग्रंथालय, किताबे तथा नये तांत्रिक आयाम का सहायता लेके उच्च कोटी आदर्श व्यक्ति का निर्माण किया जाना चाहिए। इसमे समाज की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। अंग होता है।

3.राष्ट्रीय हित परम कर्तव्यः– समाज तथा शिक्षा मंदीर मे बच्चो को राष्ट्रीय हित के विषय मे हमेशा मूल्यो के द्वारा सीखाना जरुरी है। व्यक्ती का यही कर्तव्य होना चाहिए राष्ट् का विकास।

4.आदर्शो की पूर्तता– शिक्षा से व्यक्ती को उच्च आदर्श कैसे होते है, उन्हे कैसे अपने जीवन मे उतारना चाहिए यह सीखाना जरुरी है। तभी स्वयं और राष्ट्र का विकास संभव है।

5.कर्तव्यो का सही तरीके से निर्वाहन–समाज और शिक्षा यह एक ही सिक्के के दो पैलू है। इसिलिए समाज के विकास के लिए अपने कर्तव्यो का पालन करना यह ज्ञान शिक्षा से मिलता है।

6.सांस्कृतिक एवं धार्मिक निती का विकास– समाज मे पुराने जमाने से संस्कृति का विकास हुआ है। जो कि अलग अलग धर्म से जुडा हुआ है। शिक्षा से हमे हर एक धर्म का आदर करना चाहिए यह सीख मिलती है।

7.भेदभावरहित समाज का निर्माण– समाज मे अनेको जात धर्म पंथ के लोग रहते है। पर कोई एक जात उच और कोई धर्म पंथ निच यह समाज को सिकुड देता है। हमारे देश मे समाज और शिक्षा मे भेदभाव रहित समाज को पूरी तरह से माना गया है।'वसुदैव कुटुंबकम'

8.नये तंत्र कौशल्य का विकास –समाज तथा देश के विकास हेतु नये नये तंत्र नये कौशल्य यह शिक्षा का उद्देश बन चुका है। जिससे व्यक्ती नये विचार नयी तांत्रिक तकनिकीयॉ और अर्थार्जन के नये रास्तो को खोज रहा है।

उपर दिये गये सभी विचार यह स्पष्ट करते है की समाज और शिक्षा यह व्यक्ति के लिये ही बने गये है। बिना समाज के व्यक्ती रह नही सकता और बिना शिक्षा से सुसंस्कृत,मूल्यविध जीवन व्यथित नही कर सकता। इसलिए नये आयाम के बलबूते पर अच्छा समाज और नये शिक्षा से व्यक्ति विकास किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1.उदीयमान भारतीय समाज मे शिक्षक, 2005,अत्री विनोद कुमार,सुमित एन्टरप्राइजेज,नई दिल्ली,पृ.क्र. 241–. 251

2.समाजशास्त्र एवं भारतीय समाज मे शिक्षा,2006सिंह अमरिन्द्र कुमार, श्री कविता प्रकाशन इण्डिया,पृ.क्र. 1,8,9,175–176

3.शिक्षा का समाजशास्त्र, 2007 तिवारी शारदा, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस,नई दिल्ली, पृ.क्र.209

4.शिक्षा की रुपरेखा,जून 26,1991,डॉ.बैस.एच.एस.आशिष पब्लिशिंग हाउस,नई दिल्ली,पृ.क्र.19

5.शिक्षा दर्शन, 2006,सिंह श्याम, ओमेगा पब्लिकेशन,नई दिल्ली,110002,पृ.क्र.4–5

6.शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजशास्त्रीय आधारगत परिप्रेक्ष्य,2016/17मदान पूनम,अग्रवाल पब्लिकेशन,आगरा,पृ. क्र10–11

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed /Refereed National Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-2, Issue-3, October-2023
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number October-2023/25
Impact Factor (IIJIF-1.561)
https://doi-ds.org/doilink/01.2023-11922556

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

प्रा.प्रिया माणिकराव नेहर

for publication of research paper title

"भारतीय समाज और शिक्षा"

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-02, Issue-03, Month October, Year-2023.

Dr. Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com

INDEXED BY